ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में करियर

आज भारत ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में ग्लोबल हब बन कर उभर रहा है। यही वजह है कि आज ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग का कोर्स स्टूडेंट्स के बीच काफी हॉट बना हुआ है। इस क्षेत्र में अभी और बढ़ने की गुंजाइश है। एचआर कांक्लेव 2010 में कहा गया कि दुनिया को भारत चुनौतीपूर्ण प्रतिस्पर्धा देना चाहता है तो उसे टैलेंट को खींचना भी पड़ेगा। उसके मुताबिक 2020 तक लगभग 70 लाख लोगों को इस क्षेत्र में रोजगार मिलने की संभावना है।

भारतीय ऑटो संगठन सियाम द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक 2012 तक मिलने वाली 50 लाख नौकरियों में से 12.5 लाख नौकरियां प्रबंधन के क्षेत्र में होंगी और 30 लाख पदों पर प्रशिक्षित कर्मचारी काम करेंगे। शेष नौकरियां गैर-प्रशिक्षित क्षेत्र में मिलेंगी। अनुमान है कि अगले पांच वर्षों में 1.2 करोड़ लोगों को घरेलू ऑटो कंपनियों में रोजगार मिलेगा। कलपुर्जा कंपनियां भी भारी मात्रा में रोजगार उपलब्ध कराने में लगी हैं। यहां बढ़ते अवसरों को देखते हुए कहा जा सकता है कि आने वाले समय में यहां रोजगार के सबसे ज्यादा अवसर होंगे।

आज देश की ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री तेजी से विकास कर रही है। बाजार में नई-नई डिजाइनों के वाहन लगातार लॉन्च हो रहे हैं। इसके साथ-साथ इस सेक्टर में विशेषज्ञों की मांग में भी तेजी से इजाफा हुआ है। ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग ऐसी विधा है, जो सड़कों पर दौडऩे वाले सेल्फ-प्रोपेल्ड वाहनों की डिजाइनिंग व निर्माण से जुड़ी है। इसके अलावा इनकी मरम्मत और उचित रखरखाव का काम भी ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के अंतर्गत आता है। ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री को मुख्यत: तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है- टू-व्हीलर मैन्युफैक्चरिंग, लाइट मोटर व्हीकल मैन्युफैक्चरिंग और हेवी मोटर व्हीकल मैन्युफैक्चरिंग। देश में वाहनों की बढ़ती मांग के साथ ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में दक्ष लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं।

क्वालिफिकेशन

ऑटोमोबाइल इंजीनियर बनने के लिए आपको इस विधा में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग (बीई) या बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बीटेक) डिग्री हासिल करनी होगी। ज्यादातर इंजीनियरिंग कॉलेजों में ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग का विषय बीई (मैकेनिकल) कोर्स के साथ पढ़ाया जाता है। बीई करने के बाद आप चाहें तो ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग में स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं। इसके बैचलर डिग्री कोर्स में दाखिले के लिए अभ्यर्थी का फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्स विषय के साथ बारहवीं या इसके समकक्ष परीक्षा पास होना जरूरी है। बीई कोर्स में दाखिले के लिए एंट्रेंस टेस्ट की बाधा पार करनी होती है जो अखिल भारतीय स्तर (आईआईटीजेईई) और राज्य स्तर (पीईटी) पर आयोजित किए जाते हैं।

इसके अलावा बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (बीआईटीएस), पिलानी जैसे संस्थान अपने स्तर पर अलग से प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन भी करते हैं। एंट्रेंस एग्जाम पास करने के बाद छात्र ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग से जुड़े बीई/बीटेक डिग्री कोर्स में दाखिला ले सकते हैं, जो चार वर्ष का होता है। इस कोर्स को करने बाद छात्र चाहें तो इससे जुड़ा मास्टर्स डिग्री प्रोग्राम (एमई/एमटेक) भी कर सकते हैं, जो देश के प्रतिष्ठित

आईआईटी संस्थानों के अलावा कुछ अन्य इंजीनियरिंग कॉलेजों/विश्वविद्यालयों द्वारा कराया जाता है। एमटेक करने के लिए छात्रों को पहले ग्रेजुएट एप्टिट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट) की बाधा पार करनी होगी। जिन छात्रों को ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग से जुड़े शोध व विकास कार्यों में दिलचस्पी है, वे मास्टर्स डिग्री के बाद पीएचडी भी कर सकते हैं।

इससे जुड़े अन्य क्षेत्र

यहां बात केवल ऑटोमोबाइल इंजीनियर्स की नहीं है, बल्कि कार कॉन्सेप्ट डिजाइनर, बिक्री मैनेजर, विपणन मैनेजर, प्रोडक्शन, ऑटो उपकरण क्षेत्र आदि सभी विभागों में रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, 2015 तक भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग 40 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा और तब ऑटोमोबाइल उद्योग जीडीपी में लगभग 10 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखेगा। भारतीय ऑटो जगत सालाना लगभग एक करोड़ से भी अधिक वाहनों का निर्माण करता है, जिससे 30 लाख से भी अधिक लोगों को भी रोजगार मिलता है। इसे देखते हुए इंजीनियरिंग के सभी क्षेत्रों में ऑटोमाबाइल का क्षेत्र का सबसे रोचक और आकर्षक बनता जा रहा है।

रोजगार के अवसर

ऑटोमोबाइल इंजीनियरों के लिए रोजगार के सबसे ज्यादा अवसर ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्रीज में उपलब्ध होते हैं। इस सेक्टर में आप प्रोडक्शन, डिजाइनिंग, रिसर्च और विकास कार्र्यों में लगे विभागों में रोजगार पा सकते हैं ।

आज जहां दुनियाभर की सभी बड़ी ऑटो निर्माता कंपनियां भारत में अपनी संभावनाएं तलाश रही हैं, वहीं विदेशी सड़कें भारत में निर्मित कारों की राह ताक रही हैं। आंकड़ों के मुताबिक भारत में करीब 7 अरब डॉलर का ऑटोमोबाइल बाजार प्रतिदिन हमें ऑटो जगत के एक नए रूप और आकार से रूबरू कराता है। ऑटो क्षेत्र की बड़ी कंपनियां वैश्विक स्तर पर मुकाबला करने के लिए भर्ती के अलावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण देने की तैयारी कर रही हैं। अनुमान है कि अगले पांच वर्षों में 1.2 करोड़ लोगों को घरेलू ऑटो कंपनियों में रोजगार मिलेगा। भारतीय ऑटो उद्योग 10 से 12 फीसदी की दर से बढ़ेगा। देशी-विदेशी नामी कंपनियां छोटी कार लेकर आ रही हैं। इनमें बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा होगी। कंपनियों के बीच छिड़ी यह जंग इसका सबूत है कि यह क्षेत्र लोगों के लिए अपार संभावनाएं लेकर आने वाला है।

★ <u>प्रमुख संस्थान</u>

आईआईटी, चेन्नई
बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (बीआईटीएस), पिलानी।
मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इलाहाबाद।
विश्वकर्मा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पुणे।
एलडी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, अहमदाबाद।
विश्वेश्वरैया तकनीकी विश्वविद्यालय, मंगलौर।
राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल।